नईदुनिया

संपादकीय

उत्तर भारत में कहर ढहाता कोहरा

हर साल की तरह ठंड की दस्तक के साथ ही कोहरे का कहर दिखने लगा है। समाचार छपने लगे हैं कि कोहरे के कारण इतनी फ्लाइट कैंसिल व लेट हुईं और कई का रूट बदला गया। इसी तरह कोहरे से सबसे ज्यादा ट्रेनें प्रभावित होती हैं। ट्रेनों का स्थगित होना और विलंब से चलना सामान्य बात हो गई है। भले ही हम चांद व मंगल पर दस्तक दे रहे हों, लेकिन हम देश में ऐसी तकनीकी व्यवस्था स्थापित नहीं कर पाए कि जो कोहरे में हवाई, रेल व सड़क यातायात को सुचारू संचालित करा सके। दुनिया में तमाम विषम मौसमी परिस्थितियों में लोगों ने जीने की सुगम राहें तलाशी हैं। मनुष्य की जिजीविषा के आगे तमाम विषम मौसमी परिस्थितियों ने राहें खोली हैं। मंगलवार को हरियाणा से कोहरे के चलते हुई सड़क दुर्घटनाओं में ग्यारह लोगों के मरने की खबर आई। वहीं पंजाब से पांच लोगों के मरने की खबर आई। कई लोग घायल भी हुए हैं। हादसों में कई लोग जीवनभर के लिये अपंग हो जाते हैं। हरियाणा में खासकर जीटी रोड वाली बेल्ट में कोहरे का प्रभाव ज्यादा नजर आता है। देश के अन्य राज्यों में भी दृश्यता में बाधा के चलते कुछ लोगों के मरने के समाचार हैं। सवाल यहां मरने व घायल होने वालों की संख्या का नहीं है, जिस भी परिवार में जनक्षति होती है, वह पूरा बिखर जाता है। खासकर जब मरने वाला परिवार का भरण-पोषण करने वाला हो। ये खबरें विचलित करती है कि क्यों निर्दोष लोग बेमौत मारे जाते हैं। यूं तो कोहरा सर्दियों में मौसम की देन है, लेकिन कहीं न कहीं, हमारी आधुनिक जीवन शैली से उपजा प्रदूषण भी इसे घना कर देता है। कोहरे में सड़कों में वाहनों को रेंगते देखा जा सकता है। इसके चलते लगने वाले जाम से न केवल यात्रियों के समय की बर्बादी होती है, बल्कि वाहनों का डीजल-पेट्रोल भी भारी मात्रा में बर्बाद होता है। निश्चित रूप से सड़क दुर्घटनाएं दृश्यता में कमी के चलते होती हैं,लेकिन कहीं न कहीं दुर्घटनाएं किसी की लापरवाही तथा तेज गति से वाहन चलाने से भी होती हैं।

नि:संदेह, मौसम की तल्खी से पूरी तरह मुक्त होना संभव नहीं है, लेकिन शासन-प्रशासन की सजगता व सक्रियता से कई लोगों की जिंदगी बचायी जा सकती है। एक नागरिक के रूप में हमें यात्रा करते हुए न केवल अपना बचाव करना है बल्कि हाईवे पर यात्रा के दौरान ध्यान रखना है कि हमारे किसी व्यवहार से किसी की जान पर संकट न आए। नि:संदेह, वाहन चालक के रूप में व्यक्ति का संवेदनशील व्यवहार जरूरी होता है। यूं तो परिवहन विभाग हर बार निर्देश जारी करता है कि सभी वाहनों के पीछे रिफ्लेक्टर लगे हों, गाड़ियों में फॉग लाइट हो, प्रकाश को परावर्तित करने वाले पेंट आदि सड़कों व पुलियाओं के किनारे लगे हों। वाहनों की गति पर नियंत्रण भी जरूरी है। जहां दुर्घटना उन्मुख क्षेत्र हैं उन्हें विशेष रूप से चिन्हित किया जाना चाहिए। देश के पंद्रह राज्यों में कोहरे का प्रभाव है और इस माह के अंत तक ऐसी ही स्थिति के बने रहने का अनुमान है। कई राज्यों में विभिन्न स्थानों पर विजिबिलिटी जीरो होना बेहद चिंताजनक है। लेकिन कोहरे को लेकर सटीक जानकारी देने से वाहन चालक सतर्कता से अपनी मंजिल की ओर बढ़ सकते हैं। कमोबेश यही स्थिति ट्रेनों की रही और दर्जनों ट्रेनें प्रभावित हुई हैं। जिससे यात्रियों को घंटों ठिठुराती सर्दी में रेलवे स्टेशनों में इंतजार करना पड़ा है। बताया जा रहा है कि इस साल दिसंबर में रात का पारा ज्यादा न गिरने से भी कोहरा बढ़ा है। कहा जा रहा है कि हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व दिल्ली आदि में तीस दिसंबर तक घना कोहरा बना रहेगा। यही वजह है कि पंजाब व हरियाणा आदि राज्यों में कोहरे का रेड अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विज्ञानी बता रहे हैं कि पश्चिमी विक्षोभ के चलते नये साल का स्वागत बारिश के बीच घने के कोहरे से भी हो सकता है। वहीं हिमालय के पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी हो सकती है।

नारी को शक्ति और संरक्षण की गारंटी का साल

अलविदा-2023

-डॉ. ऋतु सारस्वत

एक और साल बीतने को है। नववर्ष का आगमन, पुरातन का आकलन, उत्साह, खुशी, ऊर्जा, सफलता, असफलता, निराशा, अपमान, हताशा और अंत में 'आशा' इन्हीं शब्दों का पिटारा ही तो है वर्ष 2023ज। तीव्र गति से बढ़ती आर्थिक विकास की गति भारत का एक गौरवशाली इतिहास लिखने को तत्पर है। इस जाते हुए वर्ष में बहुत कुछ मंथन करने को है, उलझन इस बात की है कि आरंभ कहां से हो चर्चा खुशियों की हों या जिक्र हताशा का भी हो, यह तय है कि हर पराजय जीत के सबक देकर जाती है, बशर्ते हमारी मंशा देश हित की हो। इसमें किंचित भी संदेह नहीं कि बात जब देश की 'सक्षमता' की हो तो आधी-आबादी का जिक्र न उठे क्योंकि उनकी 'सक्षमता' देश को सक्षम बनाती है, उनका 'आर्थिक स्वावलंबन' देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है, उनकी 'अस्मिता' की रक्षा देश के आत्मसम्मान का संरक्षण करती है।

विचारणीय यह है कि 2023 अपनी यादों में देश की आधी-आबादी के लिए क्या छोड़कर जा रहा है इस वर्ष का आरंभ ही महिला सक्षमता की एक नवीन पटकथा के लेखन से हुआ, जब जनवरी माह में सेनाध्यक्ष ने सेना की आर्टिलरी रेजिमेंट में महिलाओं को शामिल करने का ऐलान किया जिसे सरकार ने मार्च माह में स्वीकृति दी। वर्ष2023 इस रूप में भी अपनी छाप छोड़ गया कि 'फायर एंड फ्यूरी सैपर्स' की कैप्टन शिवा चौहान को दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र सियाचिन के 'कुमार-पोस्ट' पर तैनात किया गया। महिला अग्निवीरों ने फौज में सम्मिलित होकर यह सिद्ध कर दिया कि अगर उन्हें मौका मिले तो महिला सशक्तता की नित्य नवीन इबारत वह लिख सकती हैं।

नवंबर आते-आते सेना में महिलाओं की बढ़ती भूमिका का एक और उदाहरण उस समय देखने को मिला जब सशस्त्र सेना ट्रांसफ्यूजन सेंटर की कमान पहली बार महिला अधिकारी को सौंपी गई। 2023 का अंतिम माह लैंगिक समावेशिता की अनूठी छाप तब छोड़ गया जब भारतीय सेना ने नई दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में 4 से 8 दिसंबर तक दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन की महिला अधिकारियों के लिए एक टेबल-टॉप एक्सरसाइज का आयोजन किया। यह अभ्यास प्रतिभागियों के लिए वास्तविक दुनिया की चुनौतियों को प्रतिबिंबित करते हुए जटिल शांति स्थापना परिदृश्यों पर प्रतिक्रियाओं का अनुकरण और रणनीति बनाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। आधी-आबादी की सशक्तता के पदचाप उस समय सुनाई दिए जब पूर्वोत्तर भारतीय राज्य नागालैंड से निर्वाचित महिला सांसद एस फांगनोन कोन्याक को सदन की कार्यवाही के संचालन का अवसर मिला। संसद के मानसून सत्र से पहले बनाए गए आठ सदस्यीय पैनल में चार महिलाओं को शामिल किया गया। राज्यसभा के इतिहास में पहली बार उपाध्यक्षों के इस पैनल में महिला सदस्यों को समान संख्या में प्रतिनिधित्व मिला।

महिला सशक्तीकरण का सफल अध्याय तब तक लिखा जाना संभव नहीं जब तक कि महिलाएं निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त नहीं करतीं। निर्णय लेने की क्षमता का सबसे सशक्त आधार 'राजनीतिक सत्ता' है क्योंकि यह नेतृत्व क्षमता प्रदान करती है। 2023 में महिला सशक्तीकरण का बिगुल तब बजा जब सितंबर माह में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' का उद्घोष हुआ। संसद में केंद्र सरकार ने लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने की घोषणा की। वर्ष 2023 का यह निर्णय भविष्य की तस्वीर बदल देगा। वर्तमान में लोकसभा के कुल 543 सदस्य हैं। वर्तमान में मौजूद सदन में महिलाएं 82 हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के प्रभावी होने के बाद 181 महिला सांसद होगी। यह अंतर आंकड़ों भर का नहीं होगा अपितु यह अंतर एक सशक्त देश की तस्वीर उकेरेगा।

महिलाओं के लिए दीर्घकालिक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास के उद्देश्य से की गई नीतिगत पहलुओं से महिला सशक्तीकरण सुनिश्चित करने के प्रयास तब फलीभूत होते प्रतीत होते हैं जब सांख्यिकीय एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की अक्तूबर माह में जारी आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण रिपोर्ट बताती है कि देश में महिला श्रमबल भागीदारी में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए कई पहल की गई।

यह वर्ष विश्व मानचित्र में कभी न मिटने वाली कहानी चंद्रयान-3 जब लिख रहा था तब कई महिला वैज्ञानिक उस कथा की रचना में अपना अभूतपूर्व सहयोग दे रही थीं। हर वह क्षेत्र जहां महिलाओं के अस्तित्व को नकारा गया 2023 यह सिद्ध करता चला गया कि महिला सशक्तता किसी भी बाधा को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। मार्च, 2023 में डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन की रिपोर्ट बताती है कि भारतीय महिलाएं आसमान में भी सुराख कर रही हैं। रिपोर्ट बताती है कि भारत में 15 प्रतिशत महिला पायलट हैं जो कि वैश्विक औसत से पांच प्रतिशत का तीन गुना है।

खेल की दुनिया विशेष कर क्रिकेट को 'जेंटलमैन गेम' मानने की परंपरा को महिलाओं ने भेद दिया। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशियाई गेम्स 2023 में इतिहास रचा, हरमनप्रीत कौर की अगुवाई में टीम ने गोल्ड मेडल जीता। यही नहीं, 2023 का अंतिम माह गवाह बना उस क्षण का जब दुनिया की दिग्गज टीमों में शुमार ऑस्ट्रेलिया को भारतीय महिलाओं ने इकलौते टेस्ट में 8 विकेट से पराजित करके ऐसा धमाका किया जिसकी गूंज क्रिकेट के इतिहास में सुनाई देती रहेगी।

इन सफलताओं की कहानी के बीच बहुत कुछ पीड़ादायक भी घटा। यौन शोषण के खिलाफ धरने पर बैठी महिला पहलवान का दुख, हताशा यह बताने के लिए काफी था कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था में उनकी लड़ाई आसान नहीं है। वहीं मणिपुर में महिलाओं के साथ जो कुछ भी घटित हुआ वह 2023 को शर्मिंदा कर गया। इस वर्ष का मार्च का महीना वह घाव दे गया जो कभी भी भरा नहीं जा सकता। उदयपुर (राज.) में दस वर्षीय बच्ची से दुष्कर्म के बाद उसके शरीर के 10 टुकड़े कर दिए गए वहीं भीलवाड़ा (राज.) में एक मासूम बच्ची को कोयले की भट्टी में झोंकने की घटना रूह कंपा देने वाली थी। दुष्कर्म की घटनाओं से छलनी होती महिला अस्मिता, विकास के हर स्तंभ पर एक प्रश्न चिन्ह खड़ा कर देती है।

भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृतियों का उत्सव

नजरिया

-पंकज चतुर्वेदी

तमिलनाडु से काशी आने का मतलब है महादेव के एक घर से उनके दूसरे घर तक आना। यानी मदुरै मीनाक्षी के स्थान से काशी विशालाक्षी के स्थान तक आना। प्रधानमंत्री ने कहा था, 'मुझे यकीन है, काशी के लोगों की मेहमाननवाजी के बाद जब आप जाएंगे तो अपने साथ बाबा विश्वनाथ का आशीर्वाद, काशी का स्वाद, संस्कृति और यादें भी लेकर जायेंगे।' काशी तमिल संगम के दूसरे संस्करण के शुभारम्भ पर यह बात उभरी कि यह पहल हमारे देश के विभिन्न अंचलों के साझा ज्ञान, साझा परम्पराओं को सशक्त करने का सूत्र है।

भारत में राज्यों का विभाजन पहले भाषा और उसके बाद स्थानीय संस्कृति के आधार पर हुआ, लेकिन दुखद है कि बहुत से राज्य, देश के ही अन्य हिस्सों को भलीभांति समझा नहीं पाए। हालांकि हमारे देश में ढेर सारी विविधता के बावजूद अतीत-सूत्र सभी को साथ बांधते हैं। बनारस में तमिलनाडु का 15 दिन का उत्सव उस समय को उत्खनित करता है, जिसकी जानकारी के अभाव में कभी तमिलनाडु में हिंदी या उत्तर भारतीय विरोधी स्वर देखा जाता था। जैस-जैसे बेंगलुरु-हैदराबाद में बहुराष्ट्रीय कंपनियां आईं और वहां देशभर के लोग नौकरी के लिए पहुंचने लगे, भाषा ही नहीं, संस्कृति, पर्व-त्योहार, मान्यताओं के कई अनछुए पहलू सामने आए।

इस बार काशी संगमम में भाग लेने के लिए छह समूह बनाए गए हैं। शिक्षकों के दल को यमुना नाम दिया गया है तो पेशेवर लोग के दल को गोदावरी। अध्यात्म से जुड़े लोग सरस्वती समूह में हैं और किसान और कारीगर के समूह का नाम नर्मदा है। सिन्धु नदी के दल में लेखक शामिल हैं और व्यापारी गण के लिए कावेरी दल बनाया गया है। इस तरह दक्षिण-उत्तर की नदियों को एकसाथ प्रस्तुत कर जल की तरह सांस्कृतिक प्रवाह की संकल्पना की गई है।

सदियों से बनारस शिक्षा, धर्म और व्यापार के लिए दुनियाभर के लोगों के आगमन का केंद्र रहा है। यहां आज भी तमिलनाडु से कोई 200 साल पहले आकर बसे कई सौ परिवार हैं जो अब काशी के कण-कण में रच पग गए हैं। सुब्रह्मण्यम भारती जैसे दिग्गज काशी में रहे, उन्होंने संस्कृत व हिंदी सीखी और स्थानीय संस्कृति को समृद्ध किया। तमिल में व्याख्यान दिए। काशी संगमम जैसे आयोजन भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृतियों का उत्सव है। यह विभिन्न राज्यों के समान सांस्कृतिक संबंधों की खोज और एक भारत, श्रेष्ठ भारत के संदेश को बढ़ाने के लिए दिशा प्रदान करता है। इन दो धाराओं के सम्बन्ध पांड्यों के प्राचीन काल से लेकर काशी के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में से एक बीएचयू की नींव तक रहे हैं।

मानव सभ्यता की विकास यात्रा में काशी व तमिलनाडु दोनों ही शिक्षा और शोध, सजीव भाषाई परंपरा के विकास और अध्यात्म के प्रसार में समान सहभागी रहे हैं। 15वीं शताब्दी में, शिवकाशी की स्थापना करने वाले राजवंश के वंशज राजा अधिवीर पांडियन ने दक्षिण-पश्चिमी तमिलनाडु के तेनकासी में उन भक्तों के लिए शिव मंदिर बनवाया, जो काशी की यात्रा नहीं कर सकते थे। उसके बाद, 17वीं शताब्दी में तिरुनेलवेली में पैदा हुए श्रद्धेय संत कुमारगुरुपारा ने काशी पर कविताओं की व्याकरणिक रचना 'काशी कलमबकम' लिखी और कुमारस्वामी मठ की स्थापना की। इस आदान-प्रदान ने न केवल दो क्षेत्रों के लोगों को अलग-अलग रीति-रिवाजों से परिचित कराया, बल्कि इसने परंपराओं के बीच की सीमाओं को इतना सहज और गतिशील बना दिया, जिससे वे एक-दूसरे में समाहित होते थे। काशी और तमिलनाडु दोनों महत्वपूर्ण मंदिरों के शहरों के रूप में उभरे हैं, जिनमें काशी का विश्वनाथ मंदिर और रामनाथ स्वामी मंदिर जैसे सबसे शानदार मंदिर शामिल हैं।

सुखद संयोग है कि बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के शिलान्यास समारोह में दक्षिण से महान वैज्ञानिक सीवी रमन उपस्थित थे और भारत के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन इसके कुलपति थे। काशी और चेन्नई दोनों को यूनेस्को द्वारा 'संगीत के सृजनात्मक शहरों' के रूप में मान्यता दी गई है। महान गायक, व भारत रत्न से सम्मानित एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी ने काशी की प्रसिद्ध हिंदुस्तानी गायिका सिद्धेश्वरी देवी से संगीत सीखा था।

जरूरी है कि काशी की ही तरह कश्मीर या अरुणाचल प्रदेश या फिर मणिपुर और नासिक में इस तरह के आयोजन हों, जिनमें किन्हीं दो ऐतिहासिक शहरों-नदियों-सांस्कृतिक धरोहरों के बीच सामंजस्य के बात हो। ऐसे आयोजन देश के दो सिरों, उत्तर और दक्षिण या पूर्व-उत्तर के मिलन के प्रतीक होंगे। जब हमें विरासत में इस तरह का जीवंत इतिहास और जुड़ाव मिला हो तो इसका संरक्षण सर्वोपरि हो जाता है। यह अनिवार्य है कि इस साझा विरासत का ज्ञान युवा पीढ़ी को दिया जाए और उन्हें भारत के सांस्कृतिक और सभ्यतागत लोकाचार के बारे में एक दृष्टिकोण प्रदान किया जाए। काश! हर राज्य के लोग स्थानीयता से परिचित हों, अपने राज्य से साम्य और विविधता को देखेंङ्क समझने के बाद उसे शाश्वत तरीके से स्वीकार करें।

आजकल

खुफिया तंत्र की चिंता

जम्मू-कश्मीर में पिछले कुछ दिनों के भीतर आतंकवादियों ने जिस तरह लगातार कई बड़ी वारदात को अंजाम दिया है, उससे साफ है कि राज्य में एक बार फिर हालात बेहद चिंताजनक होते जा रहे हैं। हालांकि वहां सुरक्षा बलों या सेना की कार्रवाइयों में अक्सर सीमा पार से घुसपैठ करने वाले आतंकी मारे जाते रहे हैं, मगर अब भी जैसी घटनाएं सामने आ रही हैं, वे आतंकवाद पर काबू पाने की दिशा में नए सिरे से ठोस कदम उठाने की जरूरत को रेखांकित करती हैं। हाल के दिनों में आतंकियों ने सुरक्षा बलों को निशाना बनाना शुरू किया था, मगर अब उसी कड़ी में वे फिर स्थानीय लोगों को भी नहीं बख्श रहे हैं।

गौरतलब है कि बारामूला में रविवार को आतंकियों ने एक सेवानिवृत्त वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक की गोली मार कर हत्या कर दी। यह घटना इसलिए ज्यादा त्रासद है कि जिस वक्त आतंकियों ने एसएसपी को गोली मारी, उस समय वे एक मस्जिद में नमाज पढ़ रहे थे। यानी आतंकवादियों और उनके हिमायतियों की ओर से धार्मिक भावनाओं की जिन दलीलों पर आम लोगों को भड़काने की कोशिश की जाती है, उस कसौटी पर भी ऐसा करने वाले दरअसल आम लोगों के साथ महज धोखा ही करते हैं।

विडंबना यह है कि आतंकियों की इसी प्रवृत्ति की पहचान और उसके आधार पर जब कार्रवाई के स्तर पर सख्ती की जाती है, तब उसे लेकर कुछ हलकों में बहस शुरू हो जाती है। वहीं पाकिस्तान को सबसे पहले इस बात की चिंता हो जाती है कि जम्मू-कश्मीर में भारतीय सुरक्षा बल कड़ा रुख अख्तियार कर रहे हैं। यह छिपी बात नहीं है कि राज्य में आतंकी हमलों को अंजाम देकर देश भर में अपना खौफ फैलाने के मकसद से आतंकवादी संगठन आम लोगों को निशाना बनाने से भी नहीं चूकते हैं।

दूसरी ओर, वही आतंकी संगठन जम्मू-कश्मीर के लोगों के हित में लड़ाई लड़ने का दावा करते हैं। हालांकि आए दिन आम नागरिकों से लेकर मजदूरी करके गुजारा करने राज्य में आए प्रवासी मजदूरों पर लक्षित हमलों और उनकी सिलसिलेवार हत्या की घटनाओं से आतंकवादी संगठनों का असली चेहरा सामने आता रहा है। दरअसल, जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 को खत्म किए जाने के बाद वहां के बदलते हालात की वजह से आतंकियों को पनाह देने वाले समूहों की सियासत कमजोर हुई है।

यह तो गठबंधन ही सनातन विरोधी है!

मृत्युंजय दीक्षित

देश में अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव को लेकर सभी राजनीतिक दलों ने अपनी कमर कस ली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन इस बार और बेहतर प्रदर्शन करने की दिशा में आगे बढ़ चुका है। विपक्ष भी आईएनडीआईए बनाकर हुंकार भर रहा है। वर्ष 2023 में हुए कुल नौ राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को हिमाचल प्रदेश , कर्नाटक व तेलंगाना में विजय प्राप्त हुई है। मगर इस गठबंधन में कई पेंच इतनी बुरी तरह से उलझ गए हैं कि सुलझना कठिन होता जा रहा है।

भाजपा राम मंदिर, सनातन संस्कृति के उत्थान और विकसित भारत संकल्प यात्रा के बल पर लगातार आगे बढ़ती जा रही है। मगर विपक्ष का गठबंधन अभी तक चार बैठकों के बावजूद संयोजक का नाम तक तय नहीं कर पाया है। 19 दिसंबर को बैठक में कांग्रेस ने गठबंधन में शामिल दलों से सीट साझा करने पर चर्चा करने के लिए एक पांच सदस्यीय कमेटी का गठन किया है।

जब दो राज्यों हिमाचल प्रदेश व कर्नाटक में कांग्रेस को सफलता मिली तब कुछ विश्लेषकों को ऐसा लगने लगा कि प्रधानमंत्री मोदी का जादू उतरने लगा है और कांग्रेस के नेतृत्व में संपूर्ण विपक्ष के मन में आशा का एक नया संचार हुआ है किंतु राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मिजोरम का रिजल्ट आते ही इन विश्लेषकों को सांप सूंघ गया। मध्य प्रदेश, राजस्थान व छत्तीसगढ़ में भाजपा की ऐतिहासिक विजय ने विपक्ष की बोलती बंद कर दी। अगले साल 22 जनवरी को अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारियां चल रही हैं। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट ने इसके लिए सोनिया गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, मल्लिकार्जुन खड़गे, वामपंथी नेता सीताराम येचुरी सहित कई विपक्षी नेताओं को निमंत्रण भेजा। अभी यह पक्का नहीं है कि सनातन विरोधी इस गठबंधन के नेता अयोध्या जाते हैं या नहीं। माना तो यही जा रहा है कि इनमें से कई नहीं जाएंगे। सबसे ज्यादा फजीहत इस गठबंधन की साथी समाजवादी पार्टी की होनी है। कौन नहीं जानता रामभक्त कारसेवकों पर मुलायम सिंह यादव ने ही गोली चलवाई थी। मुस्लिम-यादव गठजोड़ से सत्ता पाने वाले उनके पुत्र और सपा नेता अखिलेश यादव समारोह में चले जाते हैं तो उनके एम-वाई समीकरण को गहरा आघात लगना तय है। राम मंदिर निर्माण के समर्पण अभियान पर सपा नेताओं ने संघ व भाजपा को चंदाजीवी कहकर अपमानित किया है। आम आदमी पार्टी ने दो कदम आगे जाकर श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के चंपत राय पर जमीन घोटाले के फर्जी आरोप लगा दिये। वास्तविकता यह है कि आज इस पार्टी के कई बड़े नेता मनीष सिसोदिया, संजय सिंह व सुरेंद जैन सलाखों के पीछे हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल कथित शराब घोटाले के मुख्य किरदार बताए जा रहे हैं। ईडी का सामना तक नहीं कर पा रहे। आईएनडीआईए गठबंधन में शामिल सभी दल व नेता हिंदू सनातन संस्कृति, भारतीय सभ्यता व संस्कृति, भाषा, रहन सहन व खानपान के घोर विरोधी हैं। सभी नेता मुस्लिम तुष्टिकरण, ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के आकंठ डूबे हुए हैं। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व राजस्थान में पराजय के बाद विरोधी दलों के नेता संतुलन ही खो बैठे हैं। द्रमुक नेता तो सनातन धर्म का उन्मूलन करने का प्रण तक ले चुके हैं। गठबंधन के बड़े सरमायेदार मोहब्बत की दुकान खोलने वाले राहुल गांधी खामोश हैं। आज राममला की प्राण- प्रतिष्ठा समारोह में जाना कांग्रेस के लिए सांप-छछूंदर की गति जैसा हो गया है। जाएं तो मुश्किल और न जाए तो भी मुश्किल।

कांग्रेस के नेतृत्व में बने गठबंधन के सभी नेता हिंदू धर्म का जमकर मखौल उड़ा चुके हैं। कांग्रेस तो भगवान राम का अस्तित्व ही नकार चुकी है। ज्ञानवापी में मिले शिवलिंग को फव्वारा तक कहा जा चुका है। संसद के दोनों सदनों में विपक्षी सदस्यों के सामूहिक निलंबन की ऐतिहासिक घटना के बाद ममता बनर्जी की टीएमसी के सांसद कल्याण बनर्जी संवैधानिक पद पर विराजमान उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड का मजाक बना चुके हैं। वह बार- बार कह रहे हैं कि उपराष्ट्रपति धनखड़ का हजार बार मजाक उड़ायेंगे ।

संसद के शीतकालीन सत्र में द्रमुक सदस्य ने गौमाता का अपमान करते हुए बयान दिया कि भाजपा केवल गोमूत्र वाले राज्यों में ही है। अभी डीएमके नेता दयानिधि मारन ने बयान दिया है कि उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग सिर्फ हिंदी सीखते हैं और इसके बाद तमिलनाडु मजदूरी करने के लिए आते हैं। वो शौचालय और सड़कों की सफाई जैसे काम करते हैं। गठबंधन की पिछली बैठक में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने हिंदी में भाषण दिया तो द्रमुक नेता टीआर बालू ने उनके भाषण का अंग्रेजी अनुवाद मांग लिया। इससे नीतीश कुमार नाराज हो गये।

अब यह साफ हो चुका है कि 26 दलों के इस गठबंधन के सभी नेताओं में घोर विरोधाभास है। यह सभी दल भ्रष्टाचार के दलदल में अथाह डूबे हुए हैं और गिरफ्तारी से बचने के लिए नये- नये पैंतरे चल रहे हैं । दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर गिरफ्तारी की तलवार लटक रही है।